



स्वामी श्रद्धानन्द

# शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या: । अथर्ववेद 12.1.12  
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।



पं. मदनमोहन मालवीय

वर्ष 41 अंक 6

“शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है”

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये  
आजीवन शुल्क : 500 रुपये

जून 2018 विक्रम सम्वत् 2075 ज्येष्ठ-आषाढ़

सनातन धर्मी नेता - पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23857244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली

श्री चतर सिंह नागर

श्री विजय गुप्त

श्री सुरेन्द्र गुप्त

प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

## ‘योग साधना से ईश्वर की प्राप्ति ही मनुष्य जीवन का प्रमुख उद्देश्य’

—मनमोहन कुमार आर्य

योग शब्द का प्रयोग मुख्यतः आत्मा को ईश्वर के साथ जोड़ने को कहा जाता है। आत्मा को ईश्वर से जोड़ने का तात्पर्य है कि जीवात्मा को शुद्ध व पवित्र बनाकर उसका निरन्तर ध्यान करते हुए उसमें खो जाना जैसा कि हम यदा कदा अपने इच्छित विषय का ध्यान व अध्ययन करते हुए उसमें पूर्णतः खो जाते हैं। ईश्वर के गुणों व उसके उपकारों का जब हम ध्यान करते हुए एकाग्र हो जाते हैं और हमारे मन व अन्य सभी इन्द्रियों का बाह्य जगत से सम्पर्क सर्वथा टूटा हुआ होता है, तो यह योग की उन्नत अवस्था होती है। इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए अनेक साधनों व उपायों का सहारा लेना होता है जिसमें यम व नियम योग की प्रथम सीढ़ियाँ कहलाते हैं। बिना यम व नियम का पालन किये योग में स्थिति बनाना व सफलता प्राप्त करना सम्भव नहीं है। अतः इन्हें जानकर इनका पूरी निष्ठा व तत्परता से हर समय पालन करना आवश्यक होता है। यम अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह को कहते हैं। अहिंसा का अर्थ दूसरों के प्रति वैर अथवा विरोध की भावना को समाप्त करना, सत्य का ही पालन करना तथा असत्य व्यवहार से दूर रहना है। अस्तेय का अर्थ चोरी न करना अर्थात् छुप कर व प्रकट रूप में ऐसा कोई कार्य न करना है जो मर्यादा व आचरण के नियमों के विपरीत हो। ब्रह्मचर्य का अर्थ है कि अपनी सभी ज्ञान व कर्मन्द्रियों को वश में रखना, उन्हें स्वेच्छाचार वा अमर्यादित आचरण से रोक कर ईश्वर के गुण-कीर्तन व चिन्तन-मनन सहित ईश्वर के अनादि काल से हम पर किये गये उपकारों को स्मरण करते रहना है। अपरिग्रह का अर्थ होता है कि आवश्यकता व सुख के साधनों का अधिक मात्रा में संचय न करना। अपरिग्रही जीवन ऐसा जीवन बनाना

होता है कि जिससे कम से कम साधनों व धन से हमारा जीवन त्यागपूर्वक व्यतीत हो। इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए हमें सांसारिक पदार्थों के प्रति मोह व संग्रह की भावना का त्याग कर ईश्वर को प्राप्त करने की अपनी इच्छा व भावना को मुख्य स्थान देते हुए अपने सभी व्यक्तिगत व सामाजिक कर्तव्यों को पूरा करना होता है।

यम की तरह नियम भी पांच हैं जो योग की सफलता में अपरिहार्य एवं महत्वपूर्ण हैं। यह पांच नियम हैं शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान। शौच आन्तरिक व बाह्य स्वच्छता को कहते हैं। सन्तोष का अर्थ है कि समस्त इच्छाओं पर विजय प्राप्त कर किसी भी अवस्था में असन्तुष्ट न होना। अनुकूल और प्रतिकूल स्थितियों में सन्तुष्ट रहने का नाम ही सन्तोष है। तप का अर्थ है कि योगदर्शन के अनुसार अपने जीवन को सक्रिय रखते हुए आलस्य न करना और योग के सभी नियमों व साधनों का अभ्यास व पालन करते हुए योगमार्ग पर आगे बढ़ते जाना। तप को पुरुषार्थ से युक्त जीवन भी कह सकते हैं जिसका उद्देश्य ईश्वर की प्राप्ति में बाधक सभी विघ्नों पर विजय प्राप्त करते हुए अधिक से अधिक पुरुषार्थ व तपस्वी जीवन व्यतीत करना। तप के बाद स्वाध्याय का स्थान है जो अत्यन्त महत्वपूर्ण है। स्वाध्याय से ही योग के मार्ग को जाना जाता है। इसके लिए सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन कर मनुष्य जीवन के उद्देश्य व वैदिक ज्ञान विषयक प्रमुख बातों को जानकर योग दर्शन सहित उपनिषद, दर्शन, वेद भाष्य एवं वैदिक साहित्य के इतर ग्रन्थों का अध्ययन करना होता है। ऐसा करके ही हम ईश्वर और जीवात्मा सहित प्रकृति के यथार्थ स्वरूप व इनके विज्ञान से पूर्णतया परिचित हो जाते हैं। इसका पालन करते हुए योग साधक को



क्रियात्मक अभ्यास व अपने आचरण को शुद्ध, पवित्र रखते हुए अधिक से अधिक समयावधि तक नियमित ईश्वर का ध्यान, चिन्तन, जप व स्वाध्याय पर केन्द्रित रखना होता है। स्वाध्याय करते हुए पांचवें नियम ईश्वर प्रणिधान का भी योगाभ्यासी को पालन करना होता है। ईश्वर प्रणिधान ईश्वर को जानकर समर्पित भाव से उसकी कृपा प्राप्त करने के लिए प्रतिदिन प्रातः व सायं निश्चित समय पर न्यूनतम एक घंटा स्तुति, प्रार्थना व उपासना द्वारा उसका वन्दन करना है। सभी यम व नियमों को योग साधना की नींव कह सकते हैं। इनका अभ्यास हो जाने पर योगाभ्यासी योग साधना के मार्ग पर तीव्रता से आगे बढ़ता है और उसको ईश्वर भक्ति से प्राप्त होने वाले लाभ मिलना आरम्भ हो जाते हैं।

योग साधना में आसन का अपना विशेष महत्व है। यदि आसन सिद्ध नहीं होगा तो ईश्वरोपासना में एकाग्रता व ध्यान की निरन्तरता स्थापित नहीं की जा सकती। आरम्भ में कठिनाइयाँ आती हैं परन्तु अभ्यास

से स्थिर आसन को प्राप्त किया जा सकता है। योग साधना के लिए युवावस्था उपयुक्त समय है। आसन पदमासन व सुखासन आदि कोई भी हो सकता है। आसन के बाद योग साधक को प्राणायाम का अभ्यास करना होता है। प्राणायाम का तात्पर्य श्वास प्रश्वास वा सांस के लेने व छोड़ने में उसकी गति का रुक जाना वा रोक देना अथवा उसमें अन्तर डाल देने को कहते हैं। प्राणायाम से स्वास्थ्य विषयक अनेक लाभों के साथ मन का ईश्वर में एकाग्र होना सिद्ध होता है। प्राणायाम से मन नियंत्रित होता है और ईश्वरोपासना में स्थिर रहता है। महर्षि दयानन्द ने सन्ध्योपासना विधि में तथा अन्यत्र प्राणायाम विधि का उल्लेख किया है। महात्मा नाराण स्वामी जी ने इस पर लघु पुस्तिका भी लिखी है। उसको पढ़कर अभ्यास करते हुए किसी योगी से भी परामर्श कर लेना उचित होता है जिससे उसकी किसी क्रिया से स्वास्थ्य को किसी प्रकार की हानि न हो।

अष्टांग योग में पांचवें स्थान पर प्रत्याहार है। प्रत्याहार में सभी ज्ञानेन्द्रियों का अपने विषयों से हटा कर अपने चित्त व आत्मा में समाहित करना होता है। प्राणायाम के अभ्यास और मन व आत्मा को ईश्वर चिन्तन व जप आदि में लगाने से यह स्थिति प्राप्त होती है। योग का छठा सोपान धारणा है जो देह के किसी अंग विशेष अथवा लक्ष्य विशेष में चित्त को बांध देने व टिका देने को कहते हैं। धारणा के सिद्ध होने पर ईश्वर का ध्यान करना सुगम हो जाता है। ध्यान मन को सांसारिक व इन्द्रियों के विषयों के चिन्तन से पूर्णतया मुक्त व रोक देने को कहा जाता है। जब मन में विषयों का चिन्तन रुक जायेगा तो आत्मा ईश्वर के चिन्तन-मनन, स्तुति-प्रार्थना व जप आदि में लग कर ईश्वर से जुड़ कर उससे एकाकार होकर समाधि अर्थात् ईश्वर साक्षात्कार को प्राप्त होते हैं। समाधि अवस्था वह अवस्था है कि जब योगी ईश्वर को समर्पित हो जाता है

शेष पृष्ठ 6 पर ....

## “यस्तर्कणानुसन्धत्ते स धर्म वेद नेतरः”

- डॉ. देवेश प्रकाश आर्य

आज का युग विज्ञान का युग है। आज वैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर मानवीय जीवन से सम्बन्धित मान्यतायें स्वीकृत हो रही हैं। धर्म के विषय में भी यही सिद्धान्त पूर्णतः लागू होता है। मानव धर्म प्रणेता महर्षि मनु ने स्पष्ट घोषणा की है- “यस्तर्कणानुसन्धत्ते स धर्म वेद नेतरः”। अर्थात् जो बुद्धि की कसौटी पर-तार्किक सिद्ध हो, वही धर्म है अन्य नहीं। वैदिक धर्म ही ऐसा है जो तर्क की कसौटी पर खरा उतरता है, अन्य नाना सम्प्रदाय अन्धविश्वासों पर टिके हुए हैं। इसलिए धर्म पर कर्तव्य-अकर्तव्य के विषय में वेद को प्रमाण मानकर तदनुसार सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने के लिए मानव मात्र को सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। यही महर्षिदयानन्द की मान्यता है। आर्य समाज के आन्दोलन का यह सुपरिणाम हुआ

कि अनेक लोगों ने सत्य सनातन वैदिक धर्म को अपनाया। सारे संसार में वेदों के प्रचार-प्रसार का एक वातावरण बना। अनेक गुरुकुल, विद्यालय तथा शिक्षा के केन्द्र स्थापित किए गए। उनका यथेच्छ प्रभाव भी पड़ा। किन्तु कालक्रम से इसमें शैथिल्य आ रहा है। आज आर्यसामाजिक जनों में उस समर्पण का अभाव दृष्टिगत होता है, जो इससे पूर्व की पीढ़ी में था। आर्यों के लिए यह समय आत्मचिन्तन का है। ऋषि दयानन्द के तेजस्वी विचारों से जो क्रान्तिज्वाला देदीप्यमान हुई थी, अयोग्य स्वार्थी नेताओं के कारण अब वह धूमिल सी होती लग रही है। कहीं कोई नियन्त्रण नज़र नहीं आता। अधिकांश ने सामाजिक संस्थाओं को स्वार्थ सिद्धि का साधन मान लिया है। स्वार्थ पर आघात उन्हें स्वीकार्य नहीं

है। इससे व्यापक स्तर पर समाज के कार्य में बाधाएँ उपस्थित हो रही हैं। आर्य जन भी सिद्धान्त ज्ञान के अभाव में उन्हीं पाखण्डों की ओर अग्रसर होते दीखते हैं जिनका कभी ऋषि दयानन्द ने पुरजोर खण्डन किया था। यह पतनोन्मुख मानसिकता हमें कहीं ले जायेगी इसका परिणाम सोचते ही हृदय कम्पित होता है। ऋषि दयानन्द ने जिस सनातन वैदिक धर्म की पुनः स्थापना की, अत्यल्प काल में उसका यह विखण्डन प्रत्येक आर्य के लिए नितान्त चिन्ता का विषय है। आज जब यूरोप के अनेक देशों में वैदिक सिद्धान्तों को मान्यता मिल रही है। उन्हें वैज्ञानिक दृष्टि से उपयोगी समझ कर निरन्तर नए-नए अनुसंधान के आयाम बन रहे हैं, किन्तु अपने देश में उन्हें अप्रासंगिक माना जा रहा है यह चिन्ता का विषय नहीं है तो क्या है? यूरोपीय विद्वानों ने वेदों को समझने के लिए प्रबल पुरुषार्थ

किये। संस्कृत भाषा सीखकर उनके तह तक पहुँचने का प्रयास किया और हमारे लोगों ने वेदों की उपेक्षा की तथा संस्कृत को मृतभाषा घोषित कर दिया। आज हमारे अन्दर अपनी भाषा-भूषा के प्रति सम्मान की भावना का अभाव प्रतीत होता है। आज के वैज्ञानिक कहते हैं कि कम्प्यूटर साइंस के लिए संस्कृत सबसे उपयोगी भाषा है तो अंग्रेजी मानसिकता से ग्रस्त तथाकथित विज्ञान इनसे पाठ्यक्रमों से हटाकर अन्य वैकल्पिक भाषाओं को स्थापित करना चाहते हैं। आज हम अपने धार्मिक तथा साँस्कृतिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन में अक्षम होते जा रहे हैं। वस्तुतः वैदिक विचार धारा जिस सत्य पर आधृत है वही वैज्ञानिक भी है और व्यावहारिक भी। हमें पारस्परिक मनोमालिन्य दूर कर अपनी महती परम्परा की रक्षा के लिए एकमना होकर कार्य करना होगा तभी सफलता हमारा वरण करेगी।

## महाराणा प्रताप की जयन्ती

राष्ट्र के गौरव महाराणा प्रताप ने हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्तान के लिए जीवन भर संघर्ष किए और लड़ाइयाँ लड़ीं। वे शस्त्रधारी थे। वे भगवा ध्वज के समर्थक थे। उनका नाम सदैव अमर रहेगा।

आदरणीय प्रताप जी, आज देश की जो दशा है उस पर हम प्रकाश डाल रहे हैं:-

हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा वास्तव में अभी तक नहीं मिला है। अंग्रेजी को अनिश्चित काल के लिए सह राष्ट्रभाषा का दर्जा दे दिया गया है। आपके शासन काल में अंग्रेजी को कोई नहीं जानता था किन्तु उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश राज में अंग्रेजी का प्रचलन बहुत हो गया। अब तो हिन्दी भाषी राज्यों में भी अंग्रेजी माध्यम वाले स्कूल-कॉलेज बहुत लोकप्रिय हो रहे हैं। दो राज्यों में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बना दिया गया है। मैथिली और डोगरी को अलग भाषा की मान्यता दे दी गई है जबकि राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी और ब्रज को भी मान्यता दिलाने के प्रयास जारी हैं। इस प्रकार यह बोलियाँ भाषा का दर्जा प्राप्त कर



लेंगी तो हिन्दी वालों की संख्या कम होगी और हिन्दी का महत्व और कम होगा।

विभिन्न कारणों से हिन्दू का प्रतिशत 1881-1941 में 80 से घटकर 74 रह गया था अब फिर 1951-2018 में 88 से घटकर 82 रह गया है। सब चुप हैं। मूक दर्शक बने हुए हैं। गिरावट निरन्तर जारी है। खतरे की घंटी बज रही है जिसकी घोर उपेक्षा की जा रही है। कुछ राष्ट्रवादी/सावरकरवादी संगठन कभी-कभी चिन्ता व्यक्त करते हैं किन्तु पर्याप्त समर्थन न मिलने

पर उन्हें भी शांत होना पड़ता है। एक प्रकार से हिन्दू का अस्तित्व ही खतरे में है किन्तु स्वार्थी नेता कुर्सीवादी बने हुए हैं।

राणा जी, देश की सीमाएं सिकुड़ रही हैं। सोलहवीं शताब्दी में भारतवर्ष में अफगानिस्तान, लंका, म्यांमार, पाकिस्तान व बंगला देश भी थे किन्तु अब ये भारतवर्ष से अलग हो चुके हैं। पाकिस्तान तो जम्मू-कश्मीर को लेना चाहता है जबकि चीन अरुणाचल प्रदेश को अपना कहता है। इस प्रकार 1947 में स्वतन्त्र और खंडित भारतवर्ष पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। देश का नाम संविधानानुसार इण्डिया अर्थात् भारत है जबकि नाम हिन्दुस्तान होना चाहिए था। अनौपचारिक रूप से कोई-कोई देश को हिन्दुस्तान कह देता है। आपके अनुयायी/समर्थक, रंग-बिरंगे झण्डों वाली पार्टियों को मजबूत करके विकृत धर्मनिरपेक्षता को मजबूत कर रहे हैं। फिर आप ही बताइए कि आपके स्वप्नों का हिन्दुस्थान कैसे बनेगा?

-सावरकर वाद प्रचार सभा  
बुलन्दशहर

## “अकड़”

कमजोर होता शरीर  
घटता जीवन  
और बढ़ती अकड़  
मौत के मुहाने पर  
खड़े लोग  
मरने-मिटने को तैयार  
है धर्म-जाति के नाम पर  
प्रेम निकल जाता है  
जिनके हृदय से  
वे पाषाण थाम लेते हैं  
धर्म, जाति का झंडा  
और कुचलते हैं अपने ही  
लागों के मासूम प्रेम को  
ये अकड़बाज लोग  
जो अपने रसमय अतीत में  
पुजारी हुआ करते ये कला,  
संस्कृति, प्रेम के  
अब वे इसे गुनाह बता रहे हैं  
और अमृत को विष कहकर  
नष्ट कर रहे हैं मनुष्यता।  
सुख शांति और खुशी से  
बड़ी होती है इनके लिए  
अपनी अकड़  
जो निरन्तर बड़ी हो रही है  
और उम्र घटती जा रही है।  
-देवेन्द्र कुमार मिश्रा

# सम्पादकीय

-आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

## पत्थरबाजों से इतना प्रेम क्यों ?

आज देश के मुकूट कहे जाने वाले कश्मीर में जो हो रहा है उस पर प्रत्येक देशवासी को चिंतित होना स्वाभाविक है हमारे सीमांत राज्य जम्मू कश्मीर को लेकर एक पुराना विवाद सदियों से चल रहा है तो इसकी वजह वहाँ का राजनीतिक सिस्टम है सन् 1948 में भारत-पाक बंटवारे के बाद पाकिस्तान मामले में जो कुछ हुआ व हो रहा है वो बहुत ही चिंतनीय है।

वर्तमान में वहाँ पर पी.डी.पी. की सरकार भाजपा के समर्थन से चल रही है वहाँ की C.M. महबूबा मुफ्ती सुरक्षा मामलों में सब कुछ समर्पण करने में लगी हैं, जम्मू कश्मीर पुलिस के जवानों के साथ अर्धसैनिक बल तथा हमारी फौज पूरी मुस्तैदी से देश की सीमा की रक्षा कर रही है लेकिन महबूबा के एक बयान और निर्णय ने सबको अचम्भे में डाल दिया और सशर्त उसका अनुपालन भी करवा लिया कि रमजान के महीने में आतंकियों व पत्थरबाजों पर कोई भी सैनिक गोली नहीं चलाएगा क्योंकि रमजान का महीना बहुत पवित्र होता है इसमें किसी को मारना उचित नहीं है हालांकि केन्द्र सरकार ने भी बड़ी गलती करते हुए यह शर्त स्वीकार भी कर ली, लेकिन सवाल ये है कि जो सेकुलर गैंग पूरे देश में मुँह फाड़-फाड़ के चिल्लाता है कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता वो आज चुपचाप क्यों है जब आतंकवाद का कोई धर्म ही नहीं होता तो रमजान में सीजफायर क्यों रोका गया, क्यों उन पत्थरबाजों पर दया की गुहार लगाई जाती है कि वो तो बच्चे हैं अरे ये कैसे बच्चे हैं जो देश की सेना को ही नुकसान पहुँचा रहे

हैं। ऐसे पत्थरबाज आतंकियों को छोड़ने व इन पर रहम खाने का कोई औचित्य नहीं है। जब आतंकी स्वयं कुरान की आयतों को पढ़ता हुआ कत्ल करता है, जब आतंकी अल्ला हु अकबर बोलता हुआ हमारे जवानों पर गोली चलाता है तो बताओ तो सही कि आतंकवाद का धर्म वो आतंकी बताता है या हम। कितनी हैरानगी की बात है कि जब कश्मीर घाटी में बिगड़े हुए युवकों ने पढ़ाई लिखाई छोड़कर खुद को आतंकवादियों से जोड़ लिया आए दिन लोग इन आतंकियों के संगठन से जुड़ते जा रहे हैं, इन्हीं पत्थरबाज आतंकियों की गोलियों से हमारे कितने सैनिक जवान शहीद हो रहे हैं क्या इस सेकुलर गैंग को इस बात का भी दुःख होता है, रोज एक जवान अपनी देश की सीमा की रक्षा करता हुआ शहीद हो रहा है इस बात की किसी को चिंता नहीं है, चिंता तो बस इन दुधमुहे पत्थरबाजों की है जो कि कानून बनाकर इन को बचाने का काम किया जा रहा है, लगभग 9 हजार से ज्यादा पत्थरबाज आतंकियों को उनके देशद्रोही जुर्म के लिए उन्हें माफ कर दिया गया है। आज भी हर जुम्मे की नमाज के बाद हजारों पत्थरबाज सेना पर पत्थराव करना नहीं भूलते।

मुझे लगता है कि भारतीय जनता पार्टी को अब राजनीतिक दृष्टि को हटाकर राष्ट्रनीति की दृष्टि रखकर महबूबा के निर्णयों के खिलाफ कोई ठोस कदम उठाना होगा, जम्मू कश्मीर व देश की सुरक्षा को लेकर कड़ी कार्यवाही करनी होगी, लोगों का विश्वास जीतना होगा। रमजान के महीने में सारी सुविधाओं का पिटारा खोलना और अमरनाथ यात्रा मार्ग पर सुविधाएँ न देना ऐसा भारत के लोकतंत्र में नहीं चल सकता, पत्थरबाजों आतंकियों से मुहब्बत देश में एक खतरे की घंटी समझनी चाहिए, इस मामले में देश को भाजपा के असली राष्ट्रवाद की उस तस्वीर का इंतजार है जिसके लिए वो जानी जाती है।

## सुखी जीवन का सिद्धान्त त्रैतवाद

बालदिकमणीयरकमुर्तेकं नैव दृश्यते।

ततः परिष्वज्जीयसी देवता सा मम

प्रिया॥”

(अथर्व 10.8.25)

प्रस्तुत अथर्ववेद के दसवें काण्ड के आठवें अध्याय का पच्चीसवां मन्त्र कहता है कि हमारे बालों से भी सूक्ष्म है यह प्रकृति और जो इस प्रकृति का उपभोग करता है वह जीवात्मा नज़र नहीं आता पर इस साधन का सहारा प्राप्त करता है और जो इन दोनों से परे है वह देवतात्मा परमात्मा जो सभी का प्रिय है क्यों कि वह प्रेम स्वरूप है।

हर व्यक्ति चाहता है कि हम सुखी हो जाए... यदि सुख चाहते हैं जो हमें इस सिद्धान्त को समझ कर व्यवहार करें तभी सही अर्थों में वेद के इस सिद्धान्त को जान कर हम परम सुखी बन पाएँ.....

जैसे एक सामान्य दुकान को चलाने के लिए दुकानदार की आवश्यकता है, ग्राहक की आवश्यकता है तथा दोनों के बीच क्रिया हो सके उसके लिए सामान वस्तु की आवश्यकता है ठीक वैसे ही इस पूरे ब्रह्माण्ड को चलाने के लिए परम आत्मा दुकानदार की तरह मालिक है हमारा और हम जीवात्म ग्राहक की तरह सेवक हैं उसके तथा हम दोनों के

-डॉ. दयानिधि सेवार्थी

मो. 9971787837

बीच यह प्रकृति सामान वस्तु है जैसे किसी भी एक की कमी हो जाए तो यह दुकान नहीं चलती वैसे ही किसी भी एक की कमी होगी तो यह संसार भी नहीं चलेगा। यह संसार नहीं चलेगा तो हम अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाएँ... हम नहीं समझ पाएँ अपने उद्देश्य को... जिसने इस सिद्धान्त को समझा है वह कहीं भी रहे सुखी रहता है क्यों कि यह सिद्धान्त केवल आध्यात्मिक ही नहीं सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, धार्मिक, भौतिक सभी परिस्थितियों में लागू होने वाला सिद्धान्त है.... आज से कई वर्ष पूर्व आचार्य ऐतरेयोपनिषद् में इस सिद्धान्त के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था को चलाते आए हैं-

आचार्य पूर्व रूपं अन्तंवासी उत्तर रूपम्।

विद्या सन्धि प्रवचनम् सन्धानम् ॥

(ऐतरेयोपनिषद्)

आचार्य सम्मुख होकर एवं शिष्य को अपने सामने रखते हुए दोनों को एक रूपता से विद्या को बीच में रखकर विद्यार्जन की प्रक्रिया को सम्पन्न करते थे। यहाँ भी त्रैतवाद ही है आचार्य- शिष्य एवं विद्या।

परिवार में भी इस सिद्धान्त को हम देखें तो वहाँ भी यह सिद्धान्त है- मात-पिता- एवं संतान जहाँ तीनों सही है वही परिवार सुखी है। उसी परिवार में सुख है आनन्द है परम आनन्द की अनुभूति हो जाती है।

एक राष्ट्र को सुखमय होना है तो भी इसी सिद्धान्त को अपना कर अपने राष्ट्र को सुखी बनाया जा सकता है- राजा, प्रजा एवं साधन इन सभी को सुखी किया जा सकता है राष्ट्र सुखमय बन सकता है।

यह त्रैतवाद का सिद्धान्त हर पक्ष में हमें सुखी बनाता है हमें अपने जीवन में सन्तुलन स्थापित करने में यह सिद्धान्त हमारी पूर्णरूप से सहायता करता है। यह सिद्धान्त हमें भूत, भविष्य एवं वर्तमान तीनों कालों का संकेत करता है... यह सिद्धान्त हमें जागृत स्वप्न एवं सुसुप्ति तीनों अवस्थाओं का संकेत करता है.... यह सिद्धान्त कहता है कि जन्म-पालन- एवं संहार तीन तरह से जीव की गति होती है... यह सिद्धान्त हमें हरतरह से सुखमय बनाता है। छा सुपर्णा सयुजा सखाय समानं वृक्षं परिष्व जाते तयोरन्यः विष्पलं स्वादु अन्ति अनश्नन्तन्यो अभिचाकशति ॥

एक जीव है जो वृक्ष पर बैठकर कर्म करते हुए प्रकृति रूपी फल का

उपभोग कर रहा है तो दूसरा परमात्मा है जो केवल बैठकर देख रहा है।

हम जो भी कर्म करते हैं उसका फल परमात्मा हमें देता है हमारे कर्मों का निर्णय देने वाला वही परमात्मा है।

“क्लेशकर्म विपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुष विरोधः ईश्वरः”

(योगदर्शन - 1.24)

“द्रष्टा दृशामात्र शु(ऽ)पि प्रत्ययानुपश्य”

(योग दर्शन)

अथ प्रधान पुरुषः व्यक्तिरिक्तः कोऽयम् ईश्वरं नाम इति

(योग दर्शन- 1.24)

इस प्रकार से परमात्मा न्याय कारी है वह हमसे अलग है और हमें जानता भी है तभी तो हमारे साथ न्याय करता है।

हम अपने स्वरूप को पहचाने एवं प्रकृति के माध्यम से परमात्मा तक उस मोक्ष धाम तक जाए यही सिद्धान्त हमें समझाता है यह सिद्धान्त हमें त्रैतवाद की ओर अग्रसर करता सुख का रास्ता बताता है हम इसे समझे.... यह केवल आर्यों का नहीं यह वैदिक सिद्धान्त है... वैदिक दार्शनिक चिन्तन है... यह हमें सुखी बनाता है यह हमें दुःख से निकालता है। यही हमें सत्य से अवगत कराता है, अतः इसी सिद्धान्त के सहारे हम परम सुख को प्राप्त करते हैं “नानरूः पन्थना विद्यतेयनाय”।

## गलत रास्ते पर जाने से रोकता है पुनर्जन्म का सिद्धान्त

मृतश्चाह पुनर्जातो  
जातश्चाह पुनर्मृतः,  
नाना योनि सहस्राणि  
मयोषितानि यानि वै।  
अवाङ्मुखः पीड्यमानो  
जन्तुश्चेव समन्वितः ॥

(निरुक्त -13.19)

मैंने मृत्यु को प्राप्त हो कर फिर जन्म लिया और जन्म लेकर फिर मर गया, इस प्रकार अंशुख्य योनियों में मैंने निवास किया है।

“अपाङ् प्राडेति स्वधया  
गृभीतोऽमर्त्या मर्त्याना  
सयोनिः ॥

(ऋग्वेद -1.164.32)

आने वाले जन्म का आदि और पीछे अन्त नहीं है। शरीर को त्याग कर जीव आकाशस्थ हो गर्भ में प्राप्त कर के पुनः फल का भोग करता है

“स नो मह्या अदितये  
पुनर्दात्पितरचं दृशेयं मातरंच ॥

(ऋ. 1.24.2)

परमात्मा ने हमारे कर्मों के अनुसार पुनः इस धारा पर भेज कर परिवार के सुखों को प्रदान किया .... माता - पिता भाई बन्धु को पुनः देखने का सौभाग्य प्रदान किया।

“ये चित्पूर्व ऋतासाप  
ऋतावान् ऋतावृधः,  
पितृन्तपस्वतो यम  
ताश्चिदेवापि गच्छतात् ॥”

(ऋ. 10.54.4)

जो माता - पिता तपोनिष्ठ, यज्ञनिष्ठ, पूर्ण ज्ञानी हैं उनको हे! जीव तू बारम्बार जन्म जन्मान्तरों तक प्राप्त होता रह।

“अवश्चमेव भोक्वण्यं कृतं  
कर्म शुभाशुभम् ॥”

(श्री मद् भगवत गीता)

“ते ह्यादपरितापफलाः  
पुण्यापुण्यहेतुत्वात् ॥”

(योगदर्शन)

जो कर्म हमने किया है उस का फल जब तक समाप्त अर्थात् पूर्ण नहीं हो जाता तब तक बार-बार शरीर धारण करता रहेगा जीव और यही सिद्धान्त है पुनः पुनः जन्म लेना पुनर्जन्म का सिद्धान्त।

पुण्य कर्म का फल सुख में पाप कर्म का फल दुःख के रूप में प्राप्त होगा। ऐसा विचार हमें गलत कार्यों से बचाता है और अन्याय, अधर्म, झूठ, छल, कपट, अत्याचार, अनाचार,

भ्रष्टाचार आदि ऐसे गलत कार्यों से यह सिद्धान्त हमें रोकता है और हमें सत्य धर्म पुण्य की ओर जोड़ता है।

“सविता

प्रथमेऽहन्नग्निर्द्वितीयेवायुस्तृतीयऽआदि चतुर्थे चन्द्रमाः पञ्चमेऽऋतुषण्ठे मरुतः सप्तमे बृहस्पतिः अष्टमे मित्रो नवमे वरुणो दशमऽइन्द्र एकादशे विश्वेदेवा द्वादशे ॥”

(यजुर्वेद. 39.6)

इस मन्त्र में जीव शरीर छोड़ने के बाद 12 स्थानों का भ्रमण करता हुआ अपने गन्तव्य स्थान को प्राप्त होता है। इस तरह से द्वादश आदित्य को प्राप्त करने के पश्चात् यदि कर्म मोक्ष के लायक होते हैं तो मोक्ष वरना जैसा कर्म वैसा पुनः शरीर प्राप्त कर लेता है। भारतीय वैदिक परम्परा में वेद दर्शन, पुराण, गीता, योग सभी ग्रन्थों में पुनर्जन्म का सिद्धान्त भरा हुआ है 84 लाख अर्थात् 84 प्रकार के भोग स्थान फल को भोगता है यही पुनर्जन्म है।

“बहुनि मे व्यतीतानि  
जन्मानि तव चार्जुन।

तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप ॥”

(गीता)

बहुत से जन्म व्यतीत हो चुके हैं परन्तु कर्म के संस्कार ही हैं कि मैं अर्थात् श्री कृष्ण ब्रह्म विद्या को जानता हूँ और तू अर्थात् अर्जुन ब्रह्म विद्या से दूर है।

“वासांसि जीर्णानि यथा  
विहाय नवानि गृह्णाति  
नरोऽपराणि।

तथा शरीराणि विहाय जीर्णा  
न्यान्यानि संयाति नवानि देही

(गीता-2/22)

जैसे व्यक्ति पुराने कपड़े को बदलता है और नए वस्त्र धारण करता है। वैसे ही जीवात्मा नए शरीर को धारण करता है। जैसी बचत होती है वैसी ही खरीदारी होती है ठीक वैसे ही जैसा कर्म होगा वैसा ही आगामी शरीर मिलता है।

यहूदी, ईसाइयत, इस्लाम पुनर्जन्म के सिद्धान्त को नहीं मानते हैं। बौद्ध, जैन, हिन्दू ये तीनों पुनर्जन्म के सिद्धान्त को मानते हैं।

अमेरिका के वर्जानिया यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक डॉ. इयान स्टीवेंसन ने 40 वर्षों तक इस विषय पर

शोध कर के “रिइंकार्नेशन एंवु बायोलोजी” नाम से अपनी शोध ग्रन्थ दिया। बताया कि शरीर रहे या न रहे जीव का अस्तित्व है। फलानुसार शरीर को धारण करता है। “स्पिरित साइंस एण्ड मेटाफिजिक्स” के सिद्धान्त में पुनर्जन्म की संभावना को निश्चित माना है। बेंगलूरु की “नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एण्ड न्यूरो साइंसेज” में क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट के रूप में कार्यरत डॉ. सतवंत पसरिया ने इसी पुनर्जन्म पर शोध किया और श्वेलेस ऑफ, रिइंकार्नेशनरू एम्पिरिकल स्ती ऑफ कैसेज इन इंडियास” नामक अपने शोध ग्रन्थ में 1973 के बाद से भारत में हुई 500 पुनर्जन्म की घटनाओं का उल्लेख किया है।

गीता प्रेस गोरखपुर में भी अपनी एक पुस्तक “परलोक और पुनर्जन्मांक” में कई पुनर्जन्म की घटनाओं का वर्णन किया गया है। आचार्य वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा ने एक किताब लिखी है - “पुनर्जन्म एक ध्रुव सत्य” इसमें इस सिद्धान्त को स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया है। ओशो कि लिखी “विज्ञान भैरव तन्त्र” इस सिद्धान्त को समझने के लिए अवश्य पढ़नी चाहिए।

इस प्रकार से पुनर्जन्म का सिद्धान्त हमें हर पल याद दिलाता रहता है कि हम यदि गलत कार्य करेंगे तो उसका परिणाम भी गलत होगा। इस सिद्धान्त के रूप छात्र

छाया में अनेकों अन्ध विश्वासों ने भी जन्म लिया जैसे - ज्योतिष में फलित ज्योतिष कर्म फल का वर्णन करने लगा और भाग्य की परिकल्पना सामने आई, ग्रह नक्षत्रों के प्रभाव की परिकल्पना, दोष, दोष निवारण, पूजा पाठ, पाठशांति, नवग्रह शान्ति, मंगल-शनि का प्रकोप, आदि अनेकों अन्ध विश्वासों ने जन्म ले लिया। कुण्डली मिलाना, हस्त रेखा, लाल किताब, यस आई कैन चेन्ज जैसे विडम्बनाओं ने हमें डराना प्रारम्भ किया। जहां हमें बचना था वहां और बिगाड़ हुआ। इन सभी का गलत असर हुआ। खूब गलत कार्य करो और धर्म के नाम पर पूजा पाठ, गंगा स्नान करके पाप कर्म को समाप्त कर लो। भारतीय पुनर्जन्म सिद्धान्त कहता है कि कर्म के फल कभी भी समाप्त नहीं होता है। परन्तु उसे भोगा जाता है। मानव शरीर ही है जिसमें केवल भोग के साथ नई व्यवस्था अच्छे कर्म करने की इजाजत भी है। गलत कर्म के फल का भोग एवं अच्छे कर्म से अच्छे संस्कार का निर्माण तथा अच्छे कर्म का फल मोक्ष “धर्मार्थ काम मोक्षणां सद्यः सिद्धिभवेन्नः।” की प्राप्ति ही इस सिद्धान्त का लक्ष्य है। हमें जागरुक करता है यह सिद्धान्त कि हम अपने जीवन को सत्य धर्म पुण्य परोपकार के रास्ते मुक्ति को प्राप्त करें और त्रिविध दुःखों से बचना - “आधि दैविक आधि भौतिक आध्यात्मिक” अत्यन्त दुःख से मुक्ति का सिद्धान्त है। गलत रास्ते जाने से रोकता है यह पुनर्जन्म का सिद्धान्त है।

### आयरन की कमी है तो खाएं ड्राईफ्रूट्स

अपने आप को स्वस्थ रखने के लिए इंसान हर तरह की कोशिश करता है अच्छा खाने से लेकर जिम जाकर पसीना बहाना जैसी हर मुमकिन प्रयास करते हैं आप। लेकिन बता दें आपके स्वस्थ शरीर के लिए जितना जरूरी विटामिन्स और मिनरल्स है, उतनी ही जरूरत आयरन की। अगर आयरन की कमी हो जाए तो इससे कई तरह की बीमारियां पैदा हो जाती हैं।

आयरन की कमी को पूरा करेंगे ये ड्राईफ्रूट्स : बादाम में आयरन की कमी मात्रा काफी कम हो जाती है 10 ग्राम रोस्टेड बादाम खाने से शरीर में 5 मिली ग्राम आयरन बढ़ोतरी होती है। इतना ही नहीं, बादाम में मैग्नीशियम भी काफी मात्रा में पाया जाता है। ड्राई फ्रूट्स में अमूमन लोग काजू खाना पसंद करते हैं। दरअसल इसका स्वाद लाजवाब होता है। साथ ही सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद होता है। काजू में पोटैशियम, मैग्नीशियम, फास्फोरस, प्रोटीन और मिटामिन भरपूर मात्रा में पाया जाता है। इसमें आयरन की भी भरपूर मात्रा मौजूद होती है। यदि आप 10 ग्राम काजू का सेवन प्रतिदिन करते हैं तो आप 3 मिलीग्राम आयरन की प्राप्ति करते हैं। अखरोट भी हैं फायदेमंद : ड्राई फ्रूट्स में अखरोट ब्रेन फ्रूड माना जाता है। कहा जाता है की इसे खाने से याददाश्त तेज हो जाती है। रोज अखरोट खाने से शरीर में आयरन कमी नहीं होती।

## संस्कृत वाङ्मय के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण परक अनुसन्धान

प्रोफेसर माइकल पोर्टर का कहना है कि 'सम्भावना पूर्ण कारण पैदा किए जाते हैं, विरासत में नहीं मिलते।' अर्थात् किसी भी समस्या का समाधान खोजने की आवश्यकता पड़ती है। वह अपने आप नहीं सुलझती। वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण है। जिससे भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व त्रस्त है। पर्यावरण एक व्यापक शब्द है। यह उन संपूर्ण शक्तियों, परिस्थितियों एवं वस्तुओं का योग है जो मानव जगत को परावृत करती है। हमारे चारों ओर जो विराट प्राकृतिक परिवेश व्याप्त है, उसे ही हम पर्यावरण कहते हैं। परस्परवलंबी संबंध का नाम पर्यावरण है। हमारे चारों ओर जो भी वस्तुएं, परिस्थितियां एवं शक्तियां विद्यमान हैं, वे सब हमारे क्रियाकलापों को प्रभावित करती हैं और उसके लिए एक दायरा सुनिश्चित करती हैं। इसी दायरे को हम पर्यावरण कहते हैं। यह दायरा व्यक्ति, गांव, नगर, प्रदेश, महाद्वीप, विश्व अथवा सम्पूर्ण सौरमंडल या ब्रह्मांड हो सकता है।

सर्वप्रथम डा. रघुवीर ने तकनीकी शब्द कोष निर्माण के समय 'इन्वायरमेंट (फ्रेंच भौतिक शब्द) के लिए पर्यावरण शब्द का प्रयोग किया था। वे ही इसके प्रथम 'शब्द प्रयोक्ता' हैं। वास्तव में पर्यावरण या इन्वायरमेंट शब्द अत्यधिक प्राचीन शब्द नहीं है। जर्मन जीव वैज्ञानिक अर्नेस्ट हीकल द्वारा 'इकोलॉजी' शब्द का प्रयोग सन् 1869 में किया गया जो ग्रीक भाषा के आइकोस (ग्रह या वास स्थान) शब्द से उद्भूत है। यही शब्द परिस्थितिकी के अंग्रेजी पर्याय के रूप में इन्वायरमेंट शब्द से प्रचलित हुआ है। इन्वायरमेंट शब्द का प्रयोग, ऐसी क्रिया जो घेरने के भाव को सूचित करने के संदर्भ में किया जाता है। विभिन्न कोशों में इसके विभिन्न अर्थ दिए गए हैं। जैसे वातावरण उपाधि, परिसर, परिस्थिति, प्रभाव, प्रतिवेश, परिवर्त तथा वायुमण्डल, वातावरण और परिवेश। संस्कृत वाङ्मय में जहां मानव जाति के लिए आयुर्वेद, धर्मनीति, राजनीति, वास्तुशास्त्र, ज्योतिष आदि का विशद वर्णन है। वही पर पर्यावरण को भी महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इसीलिए वेदकालीन मनीषियों ने द्युलोक से लेकर व्यक्ति तक समस्त परिवेश के लिए शांति की प्रार्थना की है।

वैदिक काल से आज तक चिंतकों और मनीषियों द्वारा समय-समय पर पर्यावरण के प्रति अपनी चिंता को अभिव्यक्त कर मानव जाति को सचेष्ट करने के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह किया गया है। पर्यावरण का स्वच्छ एवं संतुलित होना मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। पाश्चात्य सभ्यता को यह तथ्य बीसवीं शदी के उत्तरार्द्ध में समझ में आया है।

जबकि भारतीय मनीषियों ने इसे वैदिक काल में ही अनुभूत कर लिया था। हमारे ऋषि मुनि जानते थे कि पृथ्वी, जल, अग्नि, अन्तरिक्ष तथा वायु इन पंचतत्वों से ही मानव शरीर निर्मित है।

'पंचस्वन्तु पुरुष आविवेशतान्मन्तः पुरुषे आपेतानि' - 23-25

उन्हें इस तथ्य का भाव था कि यदि इन पंचतत्वों में से एक भी दूषित हो गया तो उसका दुष्प्रभाव मानव जीवन पर पड़ना अवश्यम्भावी है।

इसीलिए उन्होंने इसके संतुलन को बनाए रखने के लिए प्रत्येक धार्मिक कृत्य करते समय लोगों से प्रकृति से समस्त अंगों को साम्यावस्था में बनाए रखने की शपथ दिलाने का प्रावधान किया था। जो कि आज भी प्रचलित है।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः, शान्तिरोषध्यः शान्तिः।

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवा शान्ति ब्रह्म शान्ति सर्वशान्ति रेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।। 36.17

यजुर्वेद का ऋषि सर्वत्र शान्ति की प्रार्थना करते हुए मानव जीवन तथा प्राकृतिक जीवन में अनुस्यूत एकता का दर्शन बहुत पहले कर चुका था। ऋग्वेद का नदी सूक्त एवं पृथिवी सूक्त तथा अथर्ववेद का अरण्यानी सूक्त क्रमशः नदियों, पृथ्वी एवं वनस्पतियों के संरक्षण एवं संवर्धन की कामना का संदेश देते हैं। भारतीय दृष्टि चिरकाल से सम्पूर्ण प्राणियों एवं वनस्पतियों के कल्याण की आकांक्षा रखती आई है। 'यदपिण्डे तद्ब्रह्मण्डे' सूक्ति पुरुष तथा प्रकृति के अन्योन्याश्रय सम्बन्ध की विज्ञान सम्मत अवधारणा को बताती है। स्वच्छ जल एवं स्वच्छ परिवेश किसी भी सामाजिक वातावरण के पल्लवन एवं विकसन की अपरिहार्य आवश्यकता है। जीव-जन्तुओं हेतु अनुकूल परिस्थितियों में ही जीव-जन्तुओं का समाज पुष्पित- पल्लवित होता है। अतः सामाजिक विकास में पर्यावरण तथा जल संरक्षण की अनिवार्यता को विस्मृत नहीं किया जा सकता है।

यज्ञ पर विशेष चर्चा

संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण पर विशेष चर्चा की गयी है। अथर्ववेद में कहा गया है कि अग्नि (यज्ञाग्नि) से धूम उत्पन्न होता है। धूम से बादल बनते हैं। और बादल से वर्षा होती है। वेदों में यज्ञ का अर्थ 'प्राकृतिक चक्र को संतुलित करने की प्रक्रिया' कहा गया है। वैज्ञानिकों ने भी वह स्वीकार किया है कि यज्ञ द्वारा वातावरण में ऑक्सीजन तथा कार्बनडाइऑक्साइड का सही सन्तुलन स्थापित किया जा सकता है। अतः यह तथ्य भी विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरा है। वेदों तथा वेदांगों में अनेक जगहों पर यज्ञ द्वारा वर्षा के उदाहरण मिलते हैं। यास्कीय निघण्टु में वन का अर्थ जल तथा सूर्य किरण एवं पति का अर्थ स्वामी माना

- आचार्य सोमेन्द्र श्री

गया है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि वैदिक ऋषि इस विज्ञान सम्मत धारणा से अवगत थे कि वन ही अतिवृष्टि तथा अनावृष्टि से उनकी रक्षा कर सकते हैं। इसीलिए ऋग्वेद में वनस्पतियों को लगाकर वन्य क्षेत्र को बढ़ाने की बात कही गयी है। सम्भवतः इसी कारण से उन्होंने वन्य क्षेत्र को 'अरण्य' अर्थात् रण से मुक्त या शान्ति क्षेत्र घोषित किया होगा। ताकि वनस्पतियों को युद्ध की विभीषिका से नष्ट होने से बचाया जा सके।

सृष्टि की उत्पत्ति और जगत का विकास ही पर्यावरण प्रादुर्भाव है। सृष्टि का जो प्रयोजन है वही पर्यावरण का भी है। जीवन और पर्यावरण का अन्योन्य संबंध है। इसीलिए आदिकाल से मानव पर्यावरण के प्रति जागरूक रहा है। ताकि मानव दीर्घायुष्य, सुस्वास्थ्य, जीवन शक्ति, पशु, कीर्ति, धन एवं विज्ञान को उपलब्ध कर सके। यही कामना अथर्ववेद का ऋषि 'आयुः प्राणं पशुं व शत जीव शरदो' करता है। ऋग्वेद में ऋषि जीवतु शरदः....' तथा यजुर्वेद में ऋषि 'शतिमिन्नुशरदो अति.. .' तथा वह ऋषि का आशीर्वाद पाता है कि हे मनुष्य! बढ़ता हुआ तू सौ शरद ऋतु और सौ बसंत तक जीवित रहे। इंद्र (विद्युत्), अग्नि, सविता (सूर्य), बृहस्पति (संकल्प शक्ति) और हवन (यज्ञ) तुझे सौ वर्ष तक आयुष्य प्रदान करें - वैदिक साहित्य में प्राकृतिक पदार्थों से कल्याण की कामना को स्वरित कहा गया है। इस पर आचार्य सायण एवं नैरुक्त का चिंतन है कि अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति 'योग' है एवं प्राप्ति का संरक्षण 'क्षेम' है। पर्यावरण के संतुलन में वृक्षों के महान योगदान एवं भूमिका को स्वीकार करते हुए ऋषि-मुनियों ने बहुत चिंतन किया है। मत्स्य पुराण में उनके महत्त्व एवं महात्म्य को स्वीकार करते हुए कहा गया है कि दस कुंओं के बराबर एक बावड़ी होती है। दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र हैं दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष होता है।

यदि हमें पर्यावरण को सुरक्षित रखना है तो हमें प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का उपयोग संस्कृत वाङ्मय के दिये निर्देशानुसार ही करना होगा। पर्यावरण के विषय में महर्षि यास्क ने जो कहा है कि वह सर्वमान्य है। यास्क ने अपने निरुक्त में वस्तु या भाव के छह विकार गिनाए हैं। उनमें पर्यावरण के सम्बन्ध में अस्ति या सत्ता शब्द चिंतनीय है। इसकी व्याख्या में वे कहते हैं कि 'कोई वस्तु तभी तक अपनी सत्ता शब्द चिंतनीय है। इसकी व्याख्या में वे कहते हैं कि 'कोई वस्तु तभी तक अपनी सत्ता बनाए रख

सकती है जब तक वह स्वयं को धारण करने में समर्थ है। जब उसमें बाहर हस्तद्वीप अधिक होता है अथवा उसकी नैसर्गिक संरचना विकृत होती है तो उसकी आत्म धारण शक्ति नष्ट हो जाती है। यही उसका प्रदूषण है। वस्तु के निर्माण का जो अनुपात है वह स्थित रहना चाहिए। अनुपात भंग हुआ और वस्तु में स्वास्थ्य का विनष्ट होना ही प्रदूषण है। संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण सुरक्षा हेतु स्पष्ट संदेश दिया गया है। अथर्ववेद में भूमि की हरेपन से रक्षा करने का जो संदेश है उसके द्वारा दो बातें कही गयी हैं।

प्रथम तो यह कि पर्यावरण तथा प्राणियों की रक्षा पृथिवी में हरियाली के माध्यम से होती है। द्वितीय यह कि भूमि भी पेड़-पौधों की हरितिमा से सुरक्षित रहती है। इसलिए भूमि को प्रदूषण से बचाए रखने के लिए न केवल हरियाली के प्रभाव को समझना होगा अपितु सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाकर धरती पर हरियाली का हर संभव प्रयास करना होगा। यही कारण है कि हमारे चिंतक मनीषियों ने वृक्षों एवं वनों की रक्षा करने वालों का विशेष सम्मान करने तथा उन्हें सतत् अन्न-धन देते रहने का संदेश दिया है। संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए संस्कृत लेखकों ने अपनी रचनाओं में प्रकृति प्रेम को प्रदर्शित किया है। उन्होंने अपने भावों को पात्रों के माम से भाई- बहन जैसा प्रेम व माता जैसा वात्सल्य दिखाया है। महाकवि कालिदास ने अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रकृति का वर्णन करते हुए उसकी नायिका शकुन्तला को प्रकृति की पुत्री के समान दिखाया है। जिसकी गोद में पलकर शकुन्तला बड़ी हुई है। पुत्री की विदाई के समय प्रकृति का रूप एक माता के समान दिखाया है।

इतना ही नहीं पुत्री को पति के घर जाना है इसलिए उसे आभूषण की आवश्यकता पड़ती है। यही सोचते हुए प्रकृति माता ने अपनी पुत्री शकुन्तला को वह सब उपलब्ध कराया जो दुर्लभ था।

संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण संरक्षण की महत्ता पर विशद वर्णन है। कुछ सराहनीय प्रयास इस और किये जा रहे हैं जैसे उत्तराखण्ड में 130 इन्फैट्री बटालियन ने 5 जून यानी विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर 'हरेला वीम' मनाते हुए महज 19 मिनट में एक लाख से अधिक पौधे रोपे गये हैं। जिसके बाद बटालियन की इस उपलब्धि को लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में दर्ज किया जाता है। इसी प्रकार राजस्थान के पिपलांत्री गांव में बेटे पैदा होने पर गांव में हर साल 111 पौधे लगाते हैं। आज विश्व पटल पर पर्यावरण एक बड़ी समस्या बनकर उभरा है। भारतीय ग्रन्थों में पर्यावरण के साथ-साथ देश की भौगोलिक स्थिति का भी वर्णन किया गया है। अतः हमें इस पर गहनता से विचार करना होगा तथा संस्कृत वाङ्मय की सहायता से पर्यावरण में सुधार के लिए सतत् प्रयास करने होंगे।

## शेष पृष्ठ 1 का ....

तथा उसे अपनी किसी इन्द्रिय व उसके विषयों का किंचित भी ज्ञान नहीं रहता। वह ईश्वर के ध्यान में निमग्न रहकर उसके आनन्द का अनुभव करता है। ईश्वर विषयक कोई शंका व जिज्ञासा इस अवस्था में शेष नहीं रहती और वह पूर्णतया निर्भ्रान्त ज्ञान को प्राप्त होता है। समाधि वा ईश्वर साक्षात्कार ही मनुष्य जीवन का परमोत्तम लक्ष्य व उद्देश्य है। इसको प्राप्त कर लेने पर संसार में कुछ भी प्राप्त करना शेष नहीं रहता। जिस उद्देश्य से परमात्मा ने हमें मनुष्य का जन्म दिया है, वह पूरा हो जाता है। इस स्थिति को बनाये रखना जीवन मुक्त अवस्था कहलाता है। बहुत से लोग समाधि को प्राप्त होकर भावी जीवन में अपने किन्हीं अपकार्यों से गिर भी सकते हैं, अतः योगी का अपने आचरण में सावधान रहना बहुत आवश्यक है। महर्षि दयानन्द के जीवन को एक योगी का आदर्श जीवन माना जा सकता है। उनके अनेक विद्वानों के लिखे हुए जीवन चरित्र भी उपलब्ध हैं जिनका अध्ययन कर अनुकरण द्वारा लाभ उठाया जा सकता है। योगाभ्यास करते हुए योग साधक को योग दर्शन व उस पर विद्वानों के उत्तमोत्तम भाष्यों का अध्ययन करते हुए योग विषय में अपने ज्ञान को अद्यतन रखना चाहिये। स्वाध्याय विषयक योग सूत्र 2/44

'स्वाध्यायादिष्टदेवतासम्प्रयोगः' का रहस्य बताते हुए पं. उदयवीर शास्त्री ने लिखा है कि श्रद्धापूर्वक स्वाध्याय के अनुष्ठान से अनेक बार स्वाध्यायी के मस्तिष्क में आकस्मिकरूप से अभिलषित अर्थ प्रतिभाष हो जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है, जैसे कोई दिव्य आत्मा आकर इस अर्थ को बता गया है। ऐसे स्वाध्यायशील योगी के मस्तिष्क अथवा भावनाओं में देव, ऋषि एवं सिद्ध आत्मा दर्शन देते जाने जाते हैं। योगी इनसे अचानक सन्मार्ग एवं सम्प्रवृत्तियों की दिशा को जानने समझने में सफल होता है।

ऋषि दयानन्द योग विषयक अपने व्याख्यान में सत्यार्थप्रकाश के सप्तम् समुल्लास में कहते हैं कि जो उपासना (अर्थात् योग) करना चाहे, उसके लिये यही आरम्भ है कि वह किसी से वैर न रखे। सर्वदा सब से प्रीति करे। सत्य बोले। मिथ्या कभी न बोले। चोरी न करे। सत्य व्यवहार करे। जितेन्द्रिय हो। लम्पट न हो और निरभिमानी हो। अभिमान कभी न करे। ये पांच प्रकार के यम मिल के उपासना योग का प्रथम अंग हैं। (उपासक व योगी को) राग-द्वेष छोड़ भीतर और जलादि से बाहर पवित्र रहे। धर्म से पुरुषार्थ करने से लाभ में न प्रसन्नता और हानि में अप्रसन्नता न करे। प्रसन्न

होकर आलस्य छोड़ सदा पुरुषार्थ किया करे। सदा दुःख-सुखों का सहन और धर्म ही का अनुष्ठान करे, अधर्म का नहीं। सर्वदा सत्य शास्त्रों को पढ़े पढ़ावे। सत्पुरुषों का संग करे और 'ओ३म्' इस एक परमात्मा के नाम के अर्थ का विचार करे। नित्यप्रति जप किया करे। अपने आत्मा को परमेश्वर की आज्ञानुकूल समर्पित कर देवे। इन पांच प्रकार के नियमों को मिला के उपासना योग का दूसरा अंग 'नियम' कहाता है। ... जब उपासना करना चाहे तब एकान्त शुद्ध देश में जाकर, आसन लगा, प्राणायाम कर बाह्य विषयों से इन्द्रियों को रोक, मन को नाभिप्रदेश में, वा हृदय, कण्ठ, नेत्र, शिखा अथवा पीठ के मध्य भाग में किसी स्थान पर स्थिर कर अपने आत्मा और परमात्मा का विवेचन करके परमात्मा में मग्न हो कर संयमी होवें। जब इन साधनों को करता है, तब उस का आत्मा और अन्तःकरण पवित्र होकर सत्य से पूर्ण हो जाता है। नित्यप्रति ज्ञान-विज्ञान बढ़ाकर मुक्ति तक पहुंच जाता है। जो आठ प्रहर में एक घड़ी भर भी इस प्रकार ध्यान करता है, वह सदा उन्नति को प्राप्त हो जाता है। वहां सर्वज्ञादि गुणों के साथ परमेश्वर की उपासना करनी सगुण, और द्वेष, रूप, रस, गन्ध, स्पर्शादि गुणों से पृथक् मान, अतिसूक्ष्म आत्मा के भीतर-बाहर व्यापक परमेश्वर में दृढ़ स्थित हो जाना निर्गुणोपासना कहाती है। इस का फल जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है, वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष दुःख छूट कर परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हो जाते हैं, इसलिये परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिये। इससे, इस का फल पृथक् होगा, परन्तु आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पर्वत के समान दुःख प्राप्त होने पर भी न घमरावेगा और सब को सहन कर सकेगा। क्या यह छोटी बात है? और जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नहीं करता, वह कृतघ्न और महामूर्ख भी होता है क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत् के सब पदार्थ जीवों को सुख के लिये दे रखे हैं, उस का गुण भूल जाना, ईश्वर ही को न मानना, कृतघ्नता और मूर्खता है। इन पंक्तियों में ऋषि दयानन्द ने जो कुछ लिखा है वह योग साधना के ही अन्तर्गत है। लेख को विराम देने से पूर्व हम ऋषि दयानन्द सरस्वती जी की पंचमहायज्ञ विधि का उल्लेख करना समीचीन समझते हैं जिसमें प्रथम महायज्ञ 'ब्रह्म यज्ञ वा सन्ध्योपासनाविधि' है। सभी आर्य इसे प्रातः व सायं समय करते हैं। यह योग साधना का प्रमुख साधन होने से यथार्थ योग है जिसको पूर्णता से करने पर जीवात्मा की उन्नति होती है और

कालान्तर में वह समाधि को प्राप्त कर सकता है। सन्ध्या के समर्पण मन्त्र में योग में उन्नति की पराकाष्ठा विषयक प्रार्थना करते हुए ध्याता वा उपासक ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि 'हे दयावान ईश्वर आपकी कृपा से हम सन्ध्या, जप व उपासना आदि कार्यों को करते हुए धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की सिद्धि को आज ही प्राप्त होंवें।'

योग साधना ईश्वर का साक्षात्कार करने के साधनों व विधि का श्रद्धपूर्वक आचरण करने को कहते हैं। इसका पूर्णता से प्रकाश ऋषि दयानन्द जी ने अपने ग्रन्थों में किया है। पंचमहायज्ञ विधि में लिखे शब्दों को प्रस्तुत कर हम इस लेख को विराम देते हैं। वह लिखते हैं कि '(सन्ध्योपासना हेतु मनुष्य को

चाहिये कि वह) एकान्त देश में आत्मा, मन और शरीर को शुद्ध शान्त करके, उस-उस कर्म में चित्त को लगा के, तत्पर होना चाहिए। इन नित्यकर्मों के फल ये हैं कि ज्ञान प्राप्ति से आत्मा की उन्नति और आरोग्यता होने से, शरीर के सुख से व्यवहार और परमार्थ कार्यों की सिद्धि होना। इससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये सिद्ध होते हैं (यही योग साधना के अन्तिम उद्देश्य वा फल हैं)। इनको प्राप्त होकर मनुष्यों को सुखी होना उचित है। इसी के साथ लेख को विराम देते हैं। ओ३म् भाम्।

पता: 196 चुक्यूवाला-2  
देहरादून-248001  
फोन:09412985121

## भारत विभाजन की घोषणा का दुखद एवं काला दिवस 3-6-1947 ई.

मुस्लिम लीग की पाकिस्तान बनाने की मांग, कांग्रेस का अंग्रेजो भारत छोड़ो आन्दोलन, 1945-46 के चुनावों में हिन्दू महासभा की पराजय, मुस्लिम लीग की सीधी कार्यवाही में व्यापक हिंसा तथा कांग्रेस द्वारा बहुमत से देश विभाजन की सहमति देना आदि के कारण ब्रिटिश सरकार ने 3 जून 1947 को देश विभाजन की दुखद घोषणा कर दी।

## प्रतिक्रिया

1. हिन्दू महासभा ने विभाजन का प्रबल विरोध हर स्तर पर किया।
2. ब्रिटिश सरकार ने विभाजन पर हिन्दू महासभा से कोई बात नहीं की और न ही उसे विश्वास में लिया।
3. 1945-46 के चुनावों में संघ ने हिन्दू महासभा का साथ छोड़ दिया और आर्य समाजियों ने खुलकर कांग्रेस का साथ दिया।
4. वीर सावरकर ने भाई परमानन्द, डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, प्रो. राम सिंह आदि नेताओं के सहयोग से हिन्दू महासभा के पक्ष में डटकर प्रचार किया किन्तु इन्हें केवल 16 प्रतिशत वोट ही मिले।
5. वीर सावरकर ने खुलकर कहा कि कांग्रेस को वोट देना, पाकिस्तान को वोट देने के बराबर है किन्तु अधिकांश जनता ने फिर भी कांग्रेस को ही चुना।
6. ब्रिटिश सरकार ने धर्म के आधार पर इस्लामी पाकिस्तान (पूर्व व पश्चिम में) बनाने के लिए लन्दन के वकील सर सिरिल रैडक्लिफ की अध्यक्षता में एक सदस्यीय आयोग की नियुक्ति कर दी। इस आयोग को कांग्रेस ने सहजभाव से स्वीकार कर लिया। आयोग का निर्णय अन्तिम रखा गया जिसकी कोई अपील नहीं हो सकती थी।
7. स्मरण रहे कि पाकिस्तान के संस्थापक मौहम्मद अली जिन्ना सर सिरिल रैडक्लिफ के यहां जूनियर वकील के रूप में कार्य करते थे अतः रैडक्लिफ की सहानुभूति जिन्ना के साथ होनी स्वाभाविक थी।
8. कांग्रेस को रैडक्लिफ का नाम अस्वीकार कर देना चाहिए था क्योंकि वे जिन्ना का पक्षपात कर सकते थे और उन्होंने किया।
9. कांग्रेस ने जवाहर लाल नेहरु को भारत की ओर से बोलने और पक्ष रखने का अधिकार अनौपचारिक रूप से दे दिया था।
10. नेहरु जी को प्रथम प्रधानमंत्री बनकर खंडित भारत में तिरंगा झण्डा लहराने की जल्दी थी अतः उन्होंने रैडक्लिफ और मान्डटबैटन से मिलकर अधिक से अधिक क्षेत्र भारत को दिलाने के लिए न तो दिलचस्पी ली और न ही प्रयास किए, फलस्वरूप पाकिस्तान को अधिक भूमि दे दी गई।

## शोक समाचार : विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्रीमती संतोष मलिक (भाभी श्रीमती आदर्श सहगल) का निधन
2. प्रो. श्योताज सिंह आयु-76 वर्ष (कोषाध्यक्ष) सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् का निधन।
3. आचार्य सुभाष जी (महाराष्ट्र) का निधन।
4. श्रीमती विमला कपूर (धर्म पत्नी श्री रामचन्द्र कपूर कालकाजी) का निधन।
5. श्री नानक चंद (आर्य समाज सोहनगंज दिल्ली) का निधन।

## आयुर्वेद सार सारे शरीर में खुजली

100 ग्राम नारियल के तेल में 5 ग्राम देशी कपूर (कपूर डेला) मिलाकर किसी कांच की शीशी में भर लें और कसकर डाट लगा दें। हिलाने अथवा कुछ देर शीशी को धूप लगाने से तेल और कपूर मिलकर एकरस होकर घुल जायेंगे। रोजाना स्नान से पहले इस तेल की मालिश करने से सारे शरीर में उठने वाली सूखी खुजली में आराम होता है। दाद आदि चर्म विकार भी दूर होते हैं। सारे बदन पर खाज होने पर इस कपूर के तेल की 10 बूँदे बाल्टी भर पानी में डालकर नहाने से भी वह शांत हो जाती है।

विशेष - (1) दाद विशेषकर (जिसमें फुन्सी और खुजली के साथ पानी भी निकलता हो) में इस तेल को रात सोते समय दाद के स्थान पर लगायें। पट्टी की आवश्यकता नहीं है। सप्ताह अथवा कुछ दिनों में घाव भर जायेगा और पहले सफेद खाल जायेगी। सफेद खाल आने पर अकेला नारियल का तेल लगाएँ। प्रातः एक मास में त्वचा अपने असली रंग में आ जाती है। (2) यदि अंगुलियों के अग्रिम पेरों में या नाखूनों के आसपास कपड़ा धोने से (साबुन के दुष्प्रभाव से) सूजन, दर्द हो या पपड़ी जम जाती हो तो कपड़ा धोने के बाद इस घोल को लगाते रहने से अंगुलियाँ और नाखून ठीक रहते हैं।

सहायक उपचार - (1) साथ ही त्रिफला चूर्ण चार ग्राम (एक चम्मच भर) निरन्तर सोते समय पानी के साथ सेवन करते रहें जब तक कि खुजली को आराम न हो जाये। इससे खुजली समाप्त हो जाती है। तेल, मिर्च, खटाई का परहेज सेवन काल में करे तो शीघ्र और स्थायी लाभ होगा। (2) त्रिफला चूर्ण के सेवन के साथ त्रिफला जल (25 ग्राम त्रिफला पूर्ण 500 ग्राम जल में 12 घंटे भिगोकर) से खाज-खुजली ग्रस्त अंगों को दिन में एक बार धोते रहने से आँखों, सिर व गुदा की खुजली और बवासीर में लाभ होता है और चर्म रोग दूर होते हैं। (3) काली मिर्च का चूर्ण एक ग्राम, गाय का घी दस ग्राम के साथ लेने से सब प्रकार की खुजली, दाद एवं विष का प्रभाव दूर होता है। नित्य प्रायः खाली पेट इक्कीस दिन तक लें। इसे लेने के बाद दो घंटे तक कुछ न खाएँ। (4) चने के आटे की रोटी बिना नमक की दो मास तक खाने से खुजली और दाद दोनों दूर हो जाते हैं।

विकल्प - नीम की 21 कोपलें साफ कर लें। जाला, मिट्टी न होनी चाहिए। 11 काली मिर्च भी मिला लें। 60 ग्राम पानी में घोटकर सुबह-शाम सात दिन पीने से खून साफ हो जाता है और खुजली नहीं रहती। बालकों को अवस्थानुसार 5, 7, 11 कोपलें 10, 20, 30, ग्राम पानी में घोटकर पिलाएँ। साथ ही फुन्सी पर नीम की छाल को अन्दर की तरफ से चन्दन की तरह पानी में घिसकर लगायें। इसके साथ नीम के पत्ते (साफ कर) उबले पानी से स्नान करे।

नीम के पानी से करे जो स्नान, खाज खुजली जो दूषित खून

मित जाये सब, निश्चित जान।

इस नीम के पानी से बगल को धोते रहने से एक सप्ताह में बगलगन्ध दूर हो जाती है।

- शैलेश प्रकाश आर्य

## माह मई 2018 के आर्थिक सहयोगी

आर्य समाज करोल बाग, नई दिल्ली	छः माह के लिए	3000/-
आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/-
ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सै.-15, फरीदाबाद	मासिक	1000/-
आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	मासिक	800/-
आर्य समाज इन्द्रा नगर, बंगलौर	मासिक	700/-
श्री शिवकुमार मदान जी, ट्रस्टी, जनकपुरी, नई दिल्ली	मासिक	700/-
आनन्द मुनि जी, आर्य समाज उद्गीर लातूर महाराष्ट्र	दान	700/-
श्री चतर सिंह नागर जी, महामंत्री, शुद्धि सभा	मासिक	500/-
श्रीमती वासंती चौधरी जी, अशोक विहार फेज-1 दिल्ली	मासिक	500/-
श्रीमती सुशीला सेठी जी, पीतम पुरा दिल्ली-34	मासिक	100/-
श्रीमती राज कुमारी सेठी विजय नगर, दिल्ली	मासिक	50/-

## श्रीमती नीलम खुराना जी द्वारा एकत्रित दान

श्रीमती कमला डावर जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	200/-
श्रीमती संतोष रानी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	200/-
श्रीमती संतोष बहल जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	200/-
श्रीमती प्रभा मनचन्दा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/-
श्रीमती नीलम खुराना जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	100/-
श्रीयुत अर्पण हंस, दोता - श्रीमती नीलम खुराना जी, आर्य महिला आश्रम	100/-
श्रीमती कृष्णा दुबे जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	100/-
श्रीमती नीरजा जैन जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	100/-
श्रीमती सविता जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	100/-
श्रीमती शुकला जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	100/-
श्रीमती अमरजीत जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	100/-
श्रीमती निर्मल शर्मा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/-
श्रीमती मन्जू सेठी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/-
श्रीमती संतोष सिंघल जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/-
श्रीमती इन्दू बिज जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/-
श्रीमती शोभा आचार्य जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/-
श्रीमती उमा बिन्दा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/-
श्रीमती प्रेम बजाज जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/-
श्रीमती कान्ता नागपाल जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/-
श्रीमती प्रेम ढींगरा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/-
श्रीमती अविनाश मल्होत्रा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/-
श्रीमती मीनू जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/-
श्रीमती कृष्णा खेड़ा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/-
श्रीमती रतना जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/-

## चुनाव समाचार

आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-60 का वार्षिक चुनाव

श्री अशोक सहगल - प्रधान

श्री नरेन्द्र वलेचा - मंत्री

श्री सतीश कुमार कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

## आर्य पुरोहित सभा दिल्ली प्रदेश का चुनाव

आचार्य प्रेमपाल शास्त्री - प्रधान

आचार्य गवेन्द्र शास्त्री - उपप्रधान

आचार्य मेघश्याम वेदालंकार - मंत्री

आचार्य अभय देव शास्त्री - कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए। शुद्धि सभा की ओर से हार्दिक बधाई।

## स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी की जन्म शताब्दी समारोह

दिनांक 10 जून 2018 (रविवार)

समय : दोपहर 3 बजे से सायं 7 बजे तक

स्थान - मावलंकार हॉल, रफी मार्ग नई दिल्ली

निवेदक : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली

समर्पण शोध संस्थान, साहिबाबाद

आर्य समाज के इतिहास में पहली बार

## अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन

दिनांक : 6, 7 व 8 जुलाई, 2018

स्थान - गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (विद्यालय विभाग के प्रांगण में)

आप सभी से प्रार्थना है कि भारी संख्या में पधारकर तन-मन-धन से सहयोग करें।

- आयोजक -

## सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

"महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

दूरभाष - 011-23274771, 23260985,

ई-मेल : sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में

शनिवार 9 जून 2018 से रविवार 17 जून 2018 तक

विशाल युवक चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व विकास शिविर

स्थान : दयानन्द मॉडल स्कूल, बी ब्लॉक, विवेक विहार, दिल्ली-95

(निकट मेट्रो स्टेशन झिलमिल व दिलशाद गार्डन)

उद्घाटन समारोह : शनिवार 9 जून 2018 सायं : 5:00 से 7:00 तक

समापन समारोह : रविवार 17 जून 2018 सायं : 5:00 से 7:30 बजे तक

दर्शनाभिलाषी : डॉ. अनिल आर्य, महेन्द्र भाई

सेवा में,

# शुद्धि समाचार

जून - 2018

## आचारः परमो धर्मः

भारतीय संस्कृति धर्म प्रधान है। धर्म से तात्पर्य ऐसे सदगुणों से है जिनको धारण करके मनुष्य अपने अभ्युदय और निःश्रेयस् की सिद्धि प्राप्त करके अखण्डरूप से स्थायी सुख-शान्ति को पाने में सामर्थ्यवान् होता है। अर्थ और काम से अनासक्त पुण्यात्मा को ही धर्म का स्व-रहस्य प्राप्त होता है। धर्म की जिज्ञासा होने पर वेद ही उस विषय में परम प्रमाण है- ऐसा मनु आदि ऋषियों का मानना है। वेद प्रतिपादित धर्म का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करके उसे जीवन में धारण करने वाला व्यक्ति ही धार्मिक कहा जाता है। इसी लिए भारतीय संस्कृति में सदाचार को परम धर्म कहा गया है। आचारभ्रष्ट व्यक्ति को साक्षात् वेद भी पवित्र नहीं कर सकते। अतः धार्मिकता की प्रथम सीढ़ी सदाचारशीलता है। असंयमी स्वेच्छाचारिता के प्रति आग्रह शील होता है, जबकि संयमी का सब कुछ धर्म पालन करने में समाहित होता है। सदाचार और भ्रष्टाचार दो विपरीत ध्रुव हैं। अतः वेद में सर्वत्र मनुष्य को यही प्रेरणा दी गई है कि वह यज्ञमय जीवन जीने के लिए यत्नवान् हो। अधार्मिक या भ्रष्टाचारी होकर तात्कालिक किसी स्वार्थ की सिद्धि भले होती हो पर उसका दीर्घ कालिक परिणाम हमेशा

### - आचार्य विद्यादेव शास्त्री

भयावह ही होता है। अतः सदाचार रहित पुरुषार्थहीन उपलब्धियों के आकर्षण में न आना ही विवेकी मनुष्य का कर्तव्य है। अनैतिक साधनों से धन कमाना या इच्छाओं की पूर्ति करना आज विश्व की सबसे बड़ी समस्या है। हमारे देश का तो और बड़ा दुर्भाग्य है कि आज यह भ्रष्टाचार के शीर्ष स्थानियों में गिना जाता है। संस्कार विहीन मनुष्य की प्रकृति ही ऐसी है कि वह पानी की तरह अधोगति करता है और अन्यायपूर्ण साधनों से धन प्राप्ति करता है। ऐसे व्यक्तियों को वेद "ऋत के ऋजु मार्ग" पर चलने की प्रेरणा देता है। वैदिक संस्कृति की अवधारणा है कि शुभ रीति से अर्जित लक्ष्मी ही पुण्यशीला होती है। उसी से मुन्य तथा समाज का कल्याण होता है। व्यक्ति को अपनी आजीविका के साधनों के चयन में अत्यन्त सावधान होना चाहिए। मन को पापी धन या आकर्षण से बचाने के लिए दृढ़ अंकुश की आवश्यकता होती है। इस मन को वश में करके ही व्यक्ति अपने को आचरण भ्रष्ट होने से बचा सकता है। मन पर विजय प्राप्त कर लेने पर भ्रष्ट आचरण या पाप कर्म कुछ नहीं होगा।

## वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम् गाना होगा, या भारत से जाना होगा ।  
भारत को जो माता समझे, उसका यहाँ ठिकाना होगा ।  
भारत की है पावन भूमि, भारतवासी राज करें,  
पेट में जिनके दर्द उठेगा, उनका सही इलाज करें ।  
कड़वी दवा को खाना होगा, वन्दे मातरम् गाना होगा ।।।।।  
भारत का अन्न खाते हैं, गैर देश के गुण गाते,  
हिन्दी-संस्कृत से डरते हैं, उर्दू अरबी अपनाते,  
राज है क्या बतलाना होगा, वन्दे मातरम् गाना होगा ।। 2 ।।  
हमें अपने देश की मिट्टी, प्राणों से भी प्यारी है,  
भारत माँ का सिर ऊँचा हो, तब ऊँची शान हमारी है ।  
इसका मान बढ़ाना होगा, वन्दे मातरम् गाना होगा ।। 3 ।।  
भारत माता सबकी माता, इसके हित जीना मरना,  
प्यारे वतन की रक्षा हित, प्राण न्यौछावर है करना,  
सबको 'पथिक' समझाना होगा, वन्दे मातरम् गाना होगा ।। 4 ।।

## जीवनदान

बन्दे जीते जी किसी के काम आया न आया,  
जिंदगी भर पुण्य कमाया या पाप कमाया,  
किसी की बिगड़ी काम में काम आया न आया,  
जीते जी पता नहीं कितनों को सताया ।।

बैल बनकर जिंदगी भर बोझ ढोया,  
सोच तो सही कितना, पाया कितना खोया।  
धन कमाया, दान देने से हिचकिचाया,  
परिवार के पालन पोषण में यह लगाया ।।

संतान का जिंदगी भर बोझ उठाता रहा,  
कण-कण जोड़ के मण करने में लगा रहा ।  
जीते जी ही परिवार आँख दिखा रहा,  
मरते समय भी उनको धन दे कर जा रहा ।।

संसार में आए है, इससे बचना है कठिन,  
वंदे अब तो मरने को है तन होगा छिन्न भिन्न !  
मरने पर जलकर तू खाक हो जायेगा,  
या इस धरती में तू दफना दिया जायेगा ।।

वन्दे जीते किसी के काम आया न आया,  
मरने पर तो तू औरो को जिंदगी दे जा ।  
तन में तेरे राकं -राफ अंग बेशकीमती है।  
इनसे दूसरों को जिंदगी मिल सकती है ।।

कर मन को मजबूत कर तन का दान,  
लाचारों बेसहारों हित कर जीवन दान।  
नैया होगी पार, फिर मानव बन कर आयेगा,  
बन्दे तेरा अगला जन्म सुधर जायेगा ।।

धन का दान कर करने वाले आकाश हैं मौजूद,  
महाशय धर्मपाल जी का कितना बड़ा वजूद,  
स्वामी जीवनान्द कर गये जीवन दान,  
ज्योति बस से अभी है दधीचि महान ।।

सोचो विचार करना छोड़ मन को कर मजबूत,  
देकर तन का दान दे जिंदादिली का सबूत।  
सेवाराम ने तो ठान लिया करने को जीवन दान,  
बन्दे हो जा तैयार, मुक्ति का कर जा काम ।।

स्वयं-सेवाराम आर्य

आर्य समाज नजफगढ़, नई दिल्ली -43 दूरभाष न. 8750508664

## प्रेरक प्रसंग

### इकलौता पुत्र न रहा

पूज्यपाद श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी पूर्वी अफ्रीका की वेद प्रचार यात्रा पर गये। एक दिन एक पादरी ने आकर कुछ धर्मवार्ता आरम्भ की। स्वामी जी ने कहा कि जो बातें आप में और हममें एक हैं उनका निर्णय करके उनको अपनाएँ और जो आपको अथवा हमें मान्य न हों, उनको छोड़ दें। इसी में मानव जाति का हित है। पादरी ने कहा ठीक है।

स्वामी जी ने कहा, "हमारा सिद्धान्त यह है कि ईश्वर एक है।"

पादरी महोदय ने कहा, "हम भी इससे सहमत हैं।" तब स्वामीजी ने कहा, "इसे कागज पर लिख लो।"

फिर स्वामी जी ने कहा, "मैं, आप व हम सब लोग उसी एक ईश्वर की सन्तान हैं। वह हमारा पिता है।"

श्री पादरी जी बोले, "ठीक है।"

श्री स्वामी जी ने कहा, "इसे भी कागज पर लिख दो।"

श्री पादरीजी ने लिख दिया। फिर स्वामीजी ने कहा - जब हम एक प्रभु की सन्तानें हैं तो नोट करो, उसका कोई इकलौता पुत्र नहीं है, यह एक मिथ्या कल्पना है। पादरी महाशय चुप हो गये।